****

MAHARAJA GANGA SINGH UNIVERSITY
BIKANER (RAJ.)

Scheme of Examination and Courses of Study

FACULTY OF SOCIAL SCIENCES

M.A. History (Genealogy and Community History)

Semester I & II – 2021-22
Semester III & IV – 2022-23

DEPARTMENT OF HISTORY
MAHARAJA GANGA SINGH UNIVERSITY
BIKANER

****

सेमेस्टर–तृतीय (Semester-III)
एम.ए. इतिहास (वंशावली एवं सामुदायिक इतिहास)
M.A. History (Genealogy and Community History)

टिप्पणी : प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न पत्र के अंकों का विभाजन अलग से दर्शाया गया है।

क्र. सं.	पेपर कोड	पेपर का नाम / विवरण	अधिकतम अंक	सैद्धांतिक	आंतरिक मूल्यांकन	हस्त लिखित शोध प्रबंध / केस स्टडी	मौखिक परीक्षा
1.	GCH-09	पाठलोचन, पाठशुद्धि एवं वंशावली सम्पादन	100	75	25	–	–
2.	GCH-10	वंशावली परम्परा एवं संरक्षण	100	75	25	–	–
3.	GCH-11	राजस्थान का सामाजिक इतिहास : जातियों एवं समुदायों के विशेष संदर्भ में	100	75	25	–	–
4.	GCH-12	सर्वेक्षण और क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित केस स्टडी	100	–	–	75	25

सेमेस्टर–चतुर्थ (Semester-IV)
एम.ए. इतिहास (वंशावली एवं सामुदायिक इतिहास)
M.A. History (Genealogy and Community History)

टिप्पणी : प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न पत्र के अंकों का विभाजन अलग से दर्शाया गया है।

क्र. सं.	पेपर कोड	पेपर का नाम / विवरण	अधिकतम अंक	सैद्धांतिक	आंतरिक मूल्यांकन	हस्त लिखित शोध प्रबंध / केस स्टडी	मौखिक परीक्षा
1.	GCH-13	राजस्थानी भाषा, साहित्य का इतिहास	100	75	25	–	–
2.	GCH-14	सामाजिक / जातीय इतिहास में प्रयुक्त	100	75	25	–	–

		शोध तकनीकें एवं पद्धतियां					
3.	GCH-15	राजस्थान में सामाजिक विचार, दर्शन एवं संस्थाएं	100	75	25	—	—
4.	GCH-16	सर्वेक्षण और क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित केस स्टडी	100	—	—	75	25

नोट :

(1) सभी सेमेस्टर का पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने व परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्यार्थी को एम.ए. इतिहास (वंशावली एवं सामुदायिक इतिहास) की उपाधि (डिग्री) प्रदान की जावेगी।

(2) पाठ्यक्रम में महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय से समय–समय पर जारी सभी परीक्षा एवं मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्त नियम परिनियम लागू होंगे।

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर–तृतीय, प्रश्न पत्र–प्रथम

पाठालोचन, पाठशुद्धि एवं वंशावली सम्पादन

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 75 **आंतरिक मूल्यांकन : 25**

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1.5 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : पाठलोचन–विज्ञान एवं लेखन परम्परा (पाठ शुद्धि पाठ, विकृत पुनः शोधन आदि)

इकाई–2 : भारत में प्रचलित वंशलेखन की प्रमुख लिपियां, शब्द रचना, वाक्य विन्यास, शब्द रूप इत्यादि।

इकाई–3 : बहियों में धार्मिक प्रतीक चिह्न, स्वास्तिक दान चित्रादि, बही लेखन में हसियां एवं सीटों में रेखा का महत्त्व।

इकाई–4 : परम्परागत लेखन पद्धतियों पर विज्ञान एवं तकनीक का प्रभाव, सांदर्भिक चुनौतियां एवं समाधान।

इकाई–5 : वंशावली संरक्षण में उन्नत प्रविधियां, विज्ञान एवं तकनीक का उचित प्रयोग, यथा सीडी, छायाप्रति

संदर्भ ग्रंथ :

1. पाठालोचन एवं उसके सिद्धांत : डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा
2. पाण्डुलिपि – विज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र

पाठ्यक्रम
सेमेस्टर–तृतीय, प्रश्न पत्र–द्वितीय
वंशावली एवं संरक्षण परम्परा

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 75 **आंतरिक मूल्यांकन : 25**

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1.5 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : वंशलेखन की वाचिक एवं मौखिक परम्परा – अर्थ, परिभाषा, प्रकार

इकाई–2 : वंशावलियों की मौखिक परम्परा – भारतीय जनजातियों एवं अन्य सामुदायिक जातियों के संदर्भ में

इकाई–3 : वंशावलियों लेखन एवं संरक्षण में तीर्थ पुरोहितों का योगदान – प्रमुख तीर्थ, लेखन विधा। संरक्षण एवं संवर्द्धन की पद्धतियां।

इकाई–4 : वर्तमान के बदलते वैश्विक परिदृश्य में वंशलेखन की आवश्यकता, चुनौतियां एवं संभावित प्रयास।

इकाई–5 : वंशावली संरक्षण हेतु सरकारी एवं गैर–सरकारी प्रयास

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ. ज्वाला प्रसाद मिश्र : अष्टादश पुराण दर्पण, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, 1993
2. डॉ. रामशरण गौड़ : आधुनिक कृष्ण काव्य में पौराणिक आख्यान, विभूति प्रकाशन, दिल्ली, 1984
3. रमाशंकर भट्टाचार्य : इतिहास–पुराण का अनुशीलन, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, 1963
4. डॉ. अवधबिहारी लाल अवस्थी : गरूडपुराण – एक अध्ययन, कैलाश प्रकाशन, लखनउ, 1968
5. डॉ. हेमवती शर्मा : नारदपुराण का सांस्कृतिक अध्ययन, बांकेबिहारी प्रकाशन, आगरा, 1999
6. डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी : पुराण पर्यालोचनम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1976

पाठ्यक्रम
सेमेस्टर–तृतीय, प्रश्न पत्र–तृतीय
राजस्थान का सामाजिक इतिहास : जातियों एवं समुदायों के विशेष संदर्भ में

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 75 **आंतरिक मूल्यांकन : 25**

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1.5 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : सिंधु घाटी सभ्यता का समकालीन राजस्थान समाज एवं उसकी रचना

इकाई–2 : वैदिक, उत्तर वैदिक कालीन सभ्यता व संस्कृति का राजस्थान पर प्रभाव, राजस्थान में प्रमुख गणराज्य एवं उनकी सामाजिक संरचना

इकाई–3 : शक, हूण, कुषाण व इण्डो ग्रीक्स के आक्रमण–विदेशी तत्त्वों का राजस्थानी समाज में समायोजन, जैन एवं बौद्ध संस्कृति का राजस्थान की सामाजिक संरचना पर प्रभाव एवं 100–700 ए.डी. के मध्य राजस्थान की प्रमुख जातियां एवं समुदाय/वर्ण व्यवस्था

इकाई–4 : पूर्व मध्यकाल में क्षत्रिय/राजपूत कुलों का अभ्युदय, मुस्लिम आक्रमणों के फलस्वरूप क्षत्रिय कुलों का पराभाव, मध्यकाल में नई जातियों व समुदायों का उदय व इसका समाज पर प्रभव। अंग्रेजी सत्ता व शासन का जाति व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण व इसका समाज पर प्रभाव।

इकाई–5 : राजस्थान के प्रमुख राजवंशों की वंशावलियों का सर्वेक्षण : सिसोदिया राठौड़, सोलंकी कछवाहा, चौहान समुदायों के विशेष संदर्भ में।

संदर्भ ग्रंथ :

1. जेम्स टॉड : एनल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 1–3
2. रामशरण शर्मा : प्रारम्भिक भारत का परिचय, 2016
3. रोमिला थापर : एनसिएन्ट इण्डियन सोशल हिस्ट्री, 1978
4. रोमिला थापर : अर्ली इण्डिया फ्रॉम ऑरिजिन्स टू 1300 ए.डी.
5. रामशरण शर्मा : शूद्राज इन एनसिएंट इण्डिया, 2002
6. जे.एच. ह्यूटन : कास्ट्स इन इण्डिया, 1963
7. सुविरा जायसवाल : कास्ट – ओरिजिन्स, फंक्शन्स एण्ड डाइमेन्शन्स ऑफ चेन्ज, मनोहर, नई दिल्ली, 1998
8. आर.सी. मजूमदार, एच.सी. रायचौधरी एवं के.के.दत्ता : एन एडवान्स्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 1974
9. डी.डी. कोशाम्बी : एन इन्ट्रोडक्शन टू दी स्टडी ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, 1962
10. जी.एन. शर्मा : सोशल लाईफ इन मिडिवल राजस्थान
11. दशरथ शर्मा, जी.एन. शर्मा एवं एम.एस. जैन : राजस्थान थ्रू दी एजेज, भाग 1, 2 एवं 3
12. एस.के.शर्मा एवं उषा शर्मा : राजस्थान थ्रू दी एजेज, भाग 1–4
13. डी.सी. शुक्ला : अर्ली हिस्ट्री ऑफ राजस्थान
14. सी.वी. वैद्य : अर्ली हिस्ट्री ऑफ राजपूत्स
15. के.डी. अर्सकाइन : चीफ्स एण्ड लीडिंग फेमेलीज इन राजपूताना
16. पं. गौरीशंकर हीराचंद औझा : राजपूतकालीन संस्कृति
17. जगदीश सिंह गहलोत : राजस्थान के राजवंशों का इतिहास
18. विश्वेश्वरनाथ रेउ : भारत के प्राचीन राजवंश, भाग 1–3
19. मुंशी हरदयाल : मरदुमशुमारी राज मारवाड़, 1891 ई.
20. रमेशचन्द्र गुणार्थी : राजस्थानी जातियों की खोज

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर–तृतीय, प्रश्नपत्र–चतुर्थ

Case Study based on Survey and Field Work

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 100

इस प्रश्न पत्र में वंशावली साहित्य व सामुदायिक/जातीय इतिहास से जुड़े विषयों में से विभागाध्यक्ष की अनुमति से लगभग 40 से 50 पृष्ठों का लघु शोध प्रबंध कार्य क्षेत्र में सर्वेक्षण व फील्ड स्टडी से संकलित रचनाओं व आंकड़ों के आधार पर लिखना होगा। लघु शोध प्रबन्ध महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त/नामित शोध निर्देशक के दिशा–निर्देशन में ही लिखना होगा। लघु शोध प्रबंध का शीर्षक एवं सर्वेक्षण का क्षेत्र प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर से अलग होना चाहिए। लघु शोध प्रबंध की कम्प्यूटर टाईप/टंकित तीन प्रतियां सत्रांत में विभागीय कार्यालय में प्रस्तुत करनी होगी।

यह शोध प्रबंध 100 अंकों का होगा जिसमें 75 अंक लघुशोध प्रबंध में संकलित सूचनाओं व शोध पद्धति की गुणवत्ता को ध्यान में रख कर बाहरी परीक्षक द्वारा दिए जायेंगे तथा 25 अंकों की मौखिक परीक्षा होगी जिसमें एक बाहरी विषय विशेषज्ञ तथा एक विभागाध्यक्ष द्वारा नामित शिक्षक सम्मिलित होंगे।

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर–चतुर्थ, प्रश्न पत्र–प्रथम

राजस्थानी भाषा, साहित्य का इतिहास

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 75 **आंतरिक मूल्यांकन : 25**

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1.5 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति एवं विकास, क्षेत्र विस्तार, राजस्थानी भाषा की विशेषताएँ, विभिन्न बोलियां

इकाई–2 : राजस्थानी साहित्य का इतिहास – काल विभाजन, प्रमुख रचनाकार, रचनाएँ, प्रवृत्तियां, काव्य शैलियां, आख्यान – काव्य लोक साहित्य।

इकाई–3 : राजस्थानी साहित्य का आदिकाल

इकाई–4 : राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल, ख्यात साहित्य एवं वंशावलियां

इकाई–5 : राजस्थानी साहित्य का आधुनिक काल

संदर्भ ग्रंथ :

1. अगरचंद नाहटा : राजस्थानी साहित्य की गौरवपूर्ण परम्परा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. पूनम दईया : राजस्थानी बात साहित्य, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
3. सांस्कृतिक राजस्थान : अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, कलकत्ता
4. मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी भाषा और साहित्य, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
5. नरोत्तमदास स्वामी : राजस्थानी का संक्षिप्त व्याकरण, शार्दूल रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर

6. रामकरण आसोपा : राजस्थानी व्याकरण
7. जॉर्ज ए. ग्रियर्सन : राजस्थानी का सर्वेक्षण (अनुवाद डॉ. आत्माराम जाजोदिया)
8. बद्रीप्रसाद साकरिया : मुहता नैणसी री ख्यात, भाग 1–4
9. हुकमसिंह भाटी : राठौड़ां री ख्यात, भाग 1–
10. श्यामलदास : वीर विनोद, भाग 1–4
11. पं. गौरीशंकर हीराचंद औझा : राजपूताना का इतिहास (उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही आदि)
12. ईश्वर सिंह : राजपूत वंशावली
13. बी.एम. बालियान : जाट/जट वंशावली अथ् गोत्रावली

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर–चतुर्थ, प्रश्न पत्र–द्वितीय

सामाजिक/जातीय इतिहास में प्रयुक्त शोध तकनीकें एवं पद्धतियां

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 75 **आंतरिक मूल्यांकन : 25**

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1.5 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : इतिहास की प्रकृति, उद्देश्य एवं परिभाषा, ग्रीको रोमन एवं प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन की परम्परा

इकाई–2 : इतिहास में तथ्यों एवं व्याख्या के बीच सम्बन्ध, इतिहास में वस्तुनिष्ठता एवं पूर्वाग्रह की समस्या, इतिहास विज्ञान है या कला?

इकाई–3 : इतिहास की विषयवस्तु, इतिहास में व्यक्ति विशेष का महत्व। इतिहास का अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध।

इकाई–4 : इतिहास के स्रोत – प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत। ऐतिहासिक तथ्यों व आंकड़ों (प्राथमिक व द्वितीयक) का संकलन। क्षेत्र भ्रमण एवं सर्वेक्षण कार्य : मौखिक, ओडियो वीडियो रिकॉर्डिंग, डायरी लिखना, अनुसूची (प्रश्नावली) आदि का उपयोग

इकाई–5 : वंशावली विषय पर विषय का चयन, शोध प्रस्ताव का निर्माण, अध्ययन के स्रोत, संदर्भ सूची, पाद टिप्पणी, शोध कार्य के विभिन्न चरण व शोध कार्य का प्रकाशन।

संदर्भ ग्रंथ :

1. ई.एच. कार : इतिहास क्या है?
2. कोलिंगवुड : द आइडिया ऑफ हिस्ट्री
3. जी.सी. पाण्डे : इतिहास–स्वरूप एवं सिद्धांत
4. शेख अली : हिस्ट्री : इट्स थ्योरी एण्ड मेथड्स
5. झारखण्ड चौबे : इतिहास दर्शन

पाठ्यक्रम
सेमेस्टर–चतुर्थ, प्रश्न पत्र–तृतीय
राजस्थान में सामाजिक विचार दर्शन एवं संस्थाएं

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 75 **आंतरिक मूल्यांकन : 25**

नोट : प्रश्न पत्र के कुल तीन खण्ड होंगे। खण्ड 'अ' में प्रत्येक इकाई से 1.5 अंक के 2 प्रश्न, कुल 10 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 50 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–ब में प्रत्येक इकाई में से 1 प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित कुल 5 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का होगा। परीक्षार्थी के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 200 शब्दों से अधिक नहीं होगी। खण्ड–स में प्रत्येक इकाई से 10 अंकों का 1 प्रश्न, कुल 5 प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर की शब्द सीमा 500 शब्दों से अधिक नहीं होगी।

इकाई–1 : सामाजिक संस्थाएं : जाति/वर्ण व्यवस्था, छुआछूत एवं गुलाम प्रथा।

इकाई–2 : राजस्थानी समाज का ढांचा एवं स्तरीकरण, जातियों के स्वरूप एवं व्यवसाय में परिवर्तन एवं इसके परिणाम।

इकाई–3 : परिवार, गोत्र, जाति से पहचान व इन संस्थाओं का वंशावली निर्माण में योगदान।

इकाई–4 : राजस्थान में सामाजिक व धार्मिक आंदोलन, सामंतवाद का उदय एवं पतन, जातिगत सामाजिक सुधार आंदोलन, आर्य समाज, भगत आंदोलन, जनजातियों में सामाजिक व राजनैतिक चेतना का उदय व फैलाव

इकाई–5 : वंशावलियों की वैधानिक स्थिति, उपयोग एवं महत्त्व

संदर्भ ग्रंथ :

1. गोपीनाथ शर्मा : सोशल लाईफ इन मिडीवल राजस्थान
2. के.एस. सिंह : पीपुल ऑफ इण्डिया – राजस्थान, भाग–2
3. मुंशी हरदयाल : कास्ट्स ऑफ मारवाड़
4. दशरथ शर्मा, जी.एन. शर्मा एवं एम.एस. जैन : राजस्थान थ्रू दी एजेज
5. जेम्स टॉड : एनल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 1–3
6. डॉ. प्रकाश व्यास : राजस्थान का सामाजिक इतिहास
7. मोहनलाल गुप्ता : राजस्थान में आरक्षित जातियां
8. रामशरण शर्मा : शूद्रों का प्राचीन इतिहास
9. दिलबाग सिंह : लैण्डलॉर्ड, स्टेट एण्ड पेजेण्ट्स

पाठ्यक्रम
सेमेस्टर–चतुर्थ, प्रश्नपत्र–चतुर्थ
Case Study based on Survey and Field Work

न्यूनतम अंक : 36

अधिकतम अंक : 100

इस प्रश्न पत्र में वंशावली साहित्य व सामुदायिक/जातीय इतिहास से जुड़े विषयों में से विभागाध्यक्ष की अनुमति से लगभग 50 से 60 पृष्ठों का लघु शोध प्रबंध कार्य क्षेत्र में सर्वेक्षण व फील्ड स्टडी से संकलित रचनाओं व आंकड़ों के आधार पर लिखना होगा। लघु शोध प्रबन्ध महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त/नामित शोध निर्देशक के दिशा–निर्देशन में ही

लिखना होगा। लघु शोध प्रबंध का शीर्षक एवं सर्वेक्षण का क्षेत्र प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सेमेस्टर से अलग होना चाहिए। लघु शोध प्रबंध की कम्प्यूटर टाईप/टंकित तीन प्रतियां सत्रांत में विभागीय कार्यालय में प्रस्तुत करनी होगी।

यह शोध प्रबंध 100 अंकों का होगा जिसमें 75 अंक लघुशोध प्रबंध में संकलित सूचनाओं व शोध पद्धति की गुणवत्ता को ध्यान में रख कर बाहरी परीक्षक द्वारा दिए जायेंगे तथा 25 अंकों की मौखिक परीक्षा होगी जिसमें एक बाहरी विषय विशेषज्ञ तथा एक विभागाध्यक्ष द्वारा नामित शिक्षक सम्मिलित होंगे।